झाँसी

की सांस्कृतिक धरोहर

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
झांसी मण्डल, झांसी

उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पश्चिमी छोर पर स्थित झाँसी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अति महत्वपूर्ण स्थान है।

प्राचीन काल में यह क्षेत्र क्रमशः 'चेदि देश' अथवा 'चेदि राष्ट्र' जेजाक भुक्ति तथा बुन्देलखण्ड का अंग रहा है। ओरछा के बुन्देल राजा बीर सिंह जूदेव द्वारा यहाँ बंगरा नामक पहाड़ी पर 1613 ई0 में दुर्ग निर्माण के पश्चात् यह स्थान झांसी नाम से प्रसिद्ध हुआ। जनुश्रुति के अनुसार ओरछा में अपने महल की छत पर बैठे राजा बीर सिंह जूदेव ने जब जैतपुर के राजा से अपने इस नव निर्मित दुर्ग की ओर इंगित करते हुये पूछा कि क्या उन्हें वह दुर्ग दिख रहा है तो जैतपुर के राजा ने कहा–'झांई सी' अर्थात् 'छाया जैसा'। यही 'झांई सी' बाद में झांसी के नाम से प्रचलित हो गया।

तथ्य है कि वीर सिंह जूदेव मुग़ल सम्राट जहांगीर के मित्र और मुग़ल मंसबदार थे। बुंदेलो का प्रभाव कालान्तर में भी रहा। 1731 में मराठों के अन्तर्गत आ गया। 1740 के दशक में सरदार नारू शंकर ने इस किले को परिवर्द्धित किया। परिवर्द्धित क्षेत्र शंकरगढ़ के नाम प्रचलित हुआ। नारू शंकर को ही झांसी नगर की स्थापना का भी श्रेय दिया जाता है जो लगभग 7.3 कि०मी० की परिधि में विस्तृत है। 1762 में नवाब वज़ीर शुजा–उद्–दौला ने किले को मुग़ल आधिपत्य में कर लिया। किंतु इसके चार वर्ष बाद ही मल्हार राव होल्कर ने इसे पुनः मराठा साम्राज्य के अधीन कर लिया। नगर–दीवार तथा उसके अनेक द्वारों का निर्माण सूबेदार शिवराव भाऊ द्वारा 1796–1814 के मध्य करवाया गया।

झांसी पर मराठों का आधिपत्य राजा गंगाधर राव के शासनकाल (21 नवम्बर, 1853) तक जारी रहा। उनकी मृत्यु के बाद उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को रानी लक्ष्मी बाई के संरक्षकत्व में गद्दी पर बैठाया गया किन्तु अंग्रेजों ने उनका दावा नकार कर झांसी को अपने साम्राज्य का अंग घोषित कर दिया। इस घटना से बुन्देल तथा मराठा सरदारों में गहरा असंतोष व्याप्त हो गया। उधर, 1857 की क्रान्ति ने आग में घी का काम किया। फरवरी, 1858 में रानी ने एक घोषणा जारी की जिसमें उन्होंने सभी हिन्दू तथा मुसलमान भाइयों से अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध में शामिल होने की अपील की । मार्च में नाना साहब तथा तात्या टोपें, आदि रानी के साथ आ गये तथा महासमर प्रारंभ हो गया। रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी सेना तैयार की तथा अप्रतिम वीरता, साहस व शौर्य का परिचय देते हुये किले से मोर्चे का नेतृत्व किया। ह्यूरोज के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने अपना अभियान शुरू किया। 17 दिनों तक अंग्रेजों ने लगातार किले पर आक्रमण जारी रखा परन्तु रानी के कुशल नेतृत्व में कटिबद्ध उत्साही सैन्यबल के पराक्रम की वजह से वह किले की दीवार को भेद नहीं पाये। रानी स्वयं अपनी रणकुशलता का परिचय देते हुए घूम–घूम कर सैनिकों का उत्साहवर्द्धन करती रहीं। अन्ततः भयंकर युद्ध तथा जबर्दस्त प्रतिरोध के बाद अंग्रेजों का किले में प्रवेश हो पाया। नगर में भी भीषण संघर्ष हो रहा था। रानी ने अफगान टुकड़ी का नेतृत्व करते हुये दोनों हाथों में तलवारें लेकर, घोड़े की रास मुँह से दबाकर, घमासान युद्ध किया। रानी के सैनिक चीते की फुर्ती से लड़े तथा अप्रतिम शौर्य का परिचय दिया किन्तु अंग्रेज अपनी कूटनीति से नगर के साथ–साथ किले पर भी आधिपत्य जमाने में सफल हो गये। रानी 4 अप्रैल, 1858 मध्य रात्रि को अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को लेकर अपने घोड़े पर सवार हो किले की दीवार से कूदकर निकल गईं।

झांसी से निकलने के बाद रानी अपने कुछ सैनिकों के साथ युद्ध करती हुई कालपी पहुँची। यहाँ से आगे बढ़ कर उन्होंने ग्वालियर दुर्ग पर कब्ज़ा कर लिया। झांसी में उनके द्वारा प्रदर्शित रणकौशल, साहस व पराक्रम की अंग्रेजों ने भी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। वे रानी के अद्भुत शौर्य से स्तब्ध थे।

ह्यूरोज कई युद्धों में रानी से पराजित होने के बाद अन्ततः ग्वालियर में विजयी हुआ तथा उसने किले पर भी अधिकार कर लिया। अन्ततः रानी 18 जून, 1858 को युद्ध में बुरी तरह घायल होने के बाद वीर गति को प्राप्त हुईं पर उनकी इच्छानुसार उनके साथियों ने उनका मृत शरीर अंग्रेजों के हाथ नहीं पड़ने दिया।

झाँसी दुर्गः- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े होने के कारण प्रत्येक भारतीय इस दुर्ग से भावनात्मक लगाव रखता है। यह दुर्ग मध्य भारत का एक सुदृढ़ एवं युद्धक रणनीति की दृष्टि से विशेष महत्व का था। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 49

रानी महल की अलंकृत दीवार

एकड़ है जिसमें 15 एकड़ भूमि में मुख्य दुर्ग व दुर्ग प्राचीर निर्मित है। इसके दो तरफ रक्षा–खाईं तथा कुल 22 बुर्ज हैं। इस दुर्ग के निर्माण के तीन प्रमुख चरण थे जिसमें मुख्य थे बुन्देल कालीन तथा मराठा कालीन निर्माण और तदुपरान्त अंगेजों द्वारा कुछ छोटे–मोटे परिवर्द्धन/परिवर्तन, आदि। अंग्रेजों ने नया प्रवेश द्वार बनवाने के साथ पंचमहल में एक अतिरिक्त तल बनवाया तथा दक्षिण–पश्चिमी तथा दक्षिण–पूर्वी बुर्जों तथा प्राचीर की मरम्मत भी करवाई ।

निर्माण की दृष्टि से दुर्ग को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –बारादरी, शंकरगढ़ एवं पंचमहल। इसके अतिरिक्त दुर्ग के अन्दर कई अन्य महत्वपूर्ण भवनों के भी अवशेष है। नगर के पराकोटे में दस द्वार थे– खण्डेराव द्वार, दतिया द्वार, उन्नाव द्वार, ओरछा द्वार, बड़गाँव द्वार, लक्ष्मी द्वार, सागर द्वार, सैनयार द्वार, शान्देर द्वार तथा झिरना द्वार । पहले आठ द्वारों में अभी काष्ठ–दरवाजे मौजूद हैं तथा अन्तिम दो द्वारों में से एक बन्द है तथा एक खुला है। सैनयार द्वार तथा झिरना द्वार के बीच ह्यूरोज द्वारा दीवार तोड़कर बनाया गया इसके अतिरिक्त 4 खिड़कियाँ क्रमशः गनपतगिर की खिड़की, अलीघोल की खिड़की, सुजान खां की खिड़की तथा सागर खिड़की भी बनाई गई थी।

कड़क बिजली:- गंगाधर राव के काल की यह तोप दुर्ग प्राचीर की पूर्वी दिशा में रखी है जो मुख्य द्वार से भीतर जाकर देखी जा सकती है। सिंह की मुखाकृति से शोभित यह तोप चलने पर बिजली सी कड़क उत्पन्न करती थी, संभवतः

कड़क बिजली

इसीलिय इसे यह नाम दिया गया। गुलाम गौस खां के नेतृत्व संचालित यह तोप शत्रुओं को आतंकित करती थी। इसकी कुल माप 5.50 मी० ग 1.80 मी० तथा व्यास 0.60 मी० है।

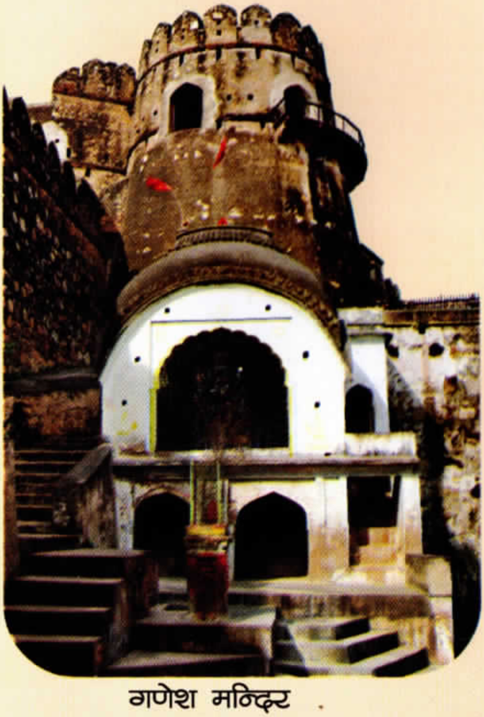

गणेश मन्दिर

गणेश मन्दिरः- किले के पूर्वी भाग में मराठा शासकों द्वारा निर्मित यह मंदिर परंपरागत शैली में किले के मुख्य दरवाजे (शहर दरवाजे) के पास स्थित है। इसकी महिमा अंग्रेजी शासन प्रारंभ होने तक बनी रही। रानी लक्ष्मीबाई नियमित रूप से इस मंदिर में पूजा–अर्चना के लिये आया करती थीं। मंदिर के गर्भगृह की छत विभिन्न ज्यामितीय तथा पुष्पाकृतियों से सुसज्जित है।

भवानी शंकरः- जनश्रुति के अनुसार इस तोप में देवी भवानी की शक्ति व्याप्त थी, अतः इसे भवानी शंकर की संज्ञा दी गई। उत्तर–दक्षिण दिशा में अवस्थित

इस तोप का मुख मकराकृत तथा पार्श्व भाग हस्ति–सदृश है। इसकी माप 5.00 मी0 ग 0.60 मी0 तथा व्यास 0.52 मी0 है। तोप के मध्य भाग में अंकित 1781 ई0 के एक लेख में इस तोप का नाम "भवानी शंकर", राजा उदित सिंह तथा गुरू जयराम का उल्लेख है।

भवानी शंकर

बारादरी:- कहा जाता है कि राजा गंगाधर राव (1838–53 ई0) द्वारा यह बारादरी अपने भाई के लिये निर्मित करवायी गयी थी, जिसकी नाटक, संगीतादि में बहुत रूचि थी।यहाँ एक फौव्वारा था जिसके छिद्रों से पानी ऊपर की ओर निकलता था। बारादरी का मध्य भाग पुष्प तथा ज्यामितीय आकृतियों से प्रचुर रूप से चित्रित है। बारादरी की छत एक लघु जलाशय के रूप में थी जिससे चतुर्दिक पानी का छिड़काव होता रहता था ।

बारादरी

शहर दरवाजा:- दुर्ग की उत्तर–पूर्वी दिशा में स्थित यह द्वार दुर्ग के समृद्धशाली दिनों में मुख्य द्वार के रूप में प्रयुक्त होता था किन्तु अंग्रेजों के समय यह अप्रयुक्त हो गया और वर्तमान मुख्य द्वार प्रयोग में आ गया है।

गुलाम गौस खां की कब्र

गुलाम गौस खां की कब्रः- दुर्ग के दक्षिण–पूर्वी कोने में गुलाम गौस खां, खुदाबख्श तथा मोती बाई की कब्रें है। ये सभी रानी लक्ष्मी बाई के सबसे वफादार साथी थे । गुलाम गौस खां तथा खुदा बख्श रानी की सेना के सबसे कुशल तोपची थे । दुर्ग की रक्षा करते हुये ये वीरगति को प्राप्त हुये तथा यहीं दफना दिये गये।

पंच महलः- मूलतः यह एक पंचतलीय भवन था जो राजा बीर सिंह जूदेव द्वारा निर्मित कराया गया था। रानी लक्ष्मी बाई ने भी विशेष रूप से इसके भूतल का प्रयोग किया जो उनके सभाकक्ष के काम आता था। प्रथम तल के एक कक्ष में रानी ठहरती थी । इस भवन का ऊपरी तल ब्रिटिश शासन काल में बनवाया गया था।

पंच महल

शंकर गढ़ :- नारूशंकर जो झांसी का शासक था, ने इस दुर्ग को इसकी उत्तरी–पूर्वी दिशा में परिवर्द्धित किया था जो बाद में शंकरगढ़ नाम से विख्यात हुआ। इसमें विभिन्न उत्सव व त्यौहार मनाये जाते थे और रानी भी अपनी सखियों के साथ उसमें भाग लेती थीं।

काल कोठरी:- मराठों द्वार निर्मित यह भवन जेल के रूप में प्रयुक्त होता था। अंग्रेजों ने इसमें एक और तल जोड़कर उसी रूप में इसे प्रयोग किया।

फांसी स्तंभ

फांसी स्तंभ:- आमोद बाग और शिव मन्दिर के पास स्थित यह फांसी–स्तंभ राजा गंगाधर राव के राज्य काल में अपराधियों को फांसी पर लटकाने के लिये निर्मित किया गया था।

शिव मन्दिर:- शंकरगढ़ के हिस्से में ही नारूशंकर के काल में निर्मित यह शिव मंदिर, मराठा व बुन्देल स्थापत्य शैली के मिश्रण का सुन्दर नमूना है। रानी लक्ष्मी बाई यहाँ नियमित रूप से पूजा अर्चना के लिए आती थीं। मुख्य शिवलिंग ग्रेनाइट

शिव मन्दिर

पत्थर का बना है। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ श्रृद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित हो पूजा–अर्चना में भाग लेते हैं।

कुदान स्थल :- किले की दक्षिणी–पूर्वी दो बुर्जों के बीच वर्गाकार चबूतरा उस स्थल का प्रतीक माना जाता है जहाँ से रानी अपने दत्तक पुत्र को साथ ले अपने घोड़े के साथ कूदकर किले से निकल गयी थीं।

रानी महल

रानी महल:- किले के बाहर शहर दरवाजे से लगभग 300 मी० की दूरी पर रानी महल स्थित है। जिसे नवलकर वंश के रघुनाथ राव द्वितीय (1769–1796) द्वारा बनवाया गया था। झांसी दुर्ग के अंग्रेजों के अधीन हो जाने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने इस महल को अपना निवास स्थान बनाया। यह महल दुमंजिला है जिसके बीच में एक फौव्वारा तथा कूप–युक्त प्रांगण है। रानी महल चूने के मसाले से बनाई विभिन्न पशु, पुष्प तथा ज्यामितीय आकृतियों से सज्जित है जिसमें मयूर–युगल व लतायें इत्यादि दर्शनीय है। दरबार हाल की दीवारें तथा छत चित्रकला के अद्भुत उदाहरण हैं जिसमें विभिन्न रंगों से जीव, पुश्प, पौधे, मयूर, पक्षी, वृक्ष की शाखायें इत्यादि कुशलता से चित्रित हैं। महल में कुल छह कक्ष हैं। जिनमें तीन दक्षिणी भाग में, दो उत्तरी भाग में तथा एक पूर्वी भाग में हैं। स्वतंत्रता के समय अंग्रेजों ने इस महल पर भीषण बमबारी की जिससे इसका अधिकांश भाग क्षतिग्रस्त हो गया। वर्तमान में महल के अन्दर इस क्षेत्र के विभिन्न मंदिरों से प्राप्त मूर्तियाँ एवं वास्तु–खण्ड प्रदर्शित हैं जो शिल्प कला के अद्भुत नमूने हैं।

गंगाधर राव की छतरी:- झांसी किले से डेढ़ किमी की दूरी पर ही राजा गंगाधर राव की समाधि स्थित है जिनकी मृत्यु 1853 ई0 में हुई थी। यह स्मारक अपने पति की स्मृति में रानी लक्ष्मी बाई ने बनवाया था। यह समाधि मुगल शैली में

गंगाधर राव की छतरी

ईंट से निर्मित ऊंची चहारदीवारी के मध्य उद्यान में स्थित है। इसे चूने के मसाले से पलस्तर किया गया है तथा चूने के मसाले से बनी विभिन्न आकृतियों से सज्जित किया गया है। इसके दो प्रवेश द्वार हैं– एक पूर्वी तथा दूसरा दक्षिणी। दक्षिणी द्वार मुख्य प्रवेश द्वार है। समाधि एक बारादरी के रूप में एक चौकोर चबूतरे के ऊपर बनायी गई है जिसके चारों ओर तीन मेहराब–युक्त द्वार हैं। यह भवन प्रस्तर स्तंभो पर टिका है जिसके ऊपर सपाट छत है। दीवारों के ऊपर प्रस्तर के छज्जे बनाये गये हैं। छज्जों के नीचे दो सज्जा–पट्ट है जिसमें विभिन्न आकृतियां उकेरी गई हैं। पूर्वी दिशा के एक पट्ट में एक चित्र के अवशेष बाकी है जिसमें संभवतः महाराज गंगाधर राव को ही दर्शाया गया है।

मेमोरियल सिमेट्री :- घेराबन्दी के दौरान युद्धस्थल में मारे गये 166 ब्रिटिश सिपाहियों/अधिकारियों की स्मृति में बने इस अष्टकोणीय स्मारक में चार प्रवेशद्वार

मेमोरियल सिमेट्री, झांसी

हैं। चौकोर अधिष्ठान पर आधारित इस स्मारक का ऊपरी भाग गुम्बद से सज्जित है जिसके शीर्ष पर एक 'क्रास' बना है। मुख्य स्मारक के समक्ष एक सोपानयुक्त फौव्वारा है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का लखनऊ मण्डल झांसी के इन स्मारकों के मौलिक स्वरूप को बनाये रखने के लिये तथा इनके समुचित संरक्षण/परिरक्षण के लिये सतत प्रयत्नशील है। वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के देश के लिये बलिदान के सम्मान में यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम सभी मिलकर झांसी के स्मारकों का संरक्षण सच्ची ईमानदारी एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ करें जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए भी ये स्मारक देश–भक्ति की प्रेरणा व आनन्द का श्रोत बने रहें।

स्थल–विन्यास
झाँसी दुर्ग, झाँसी

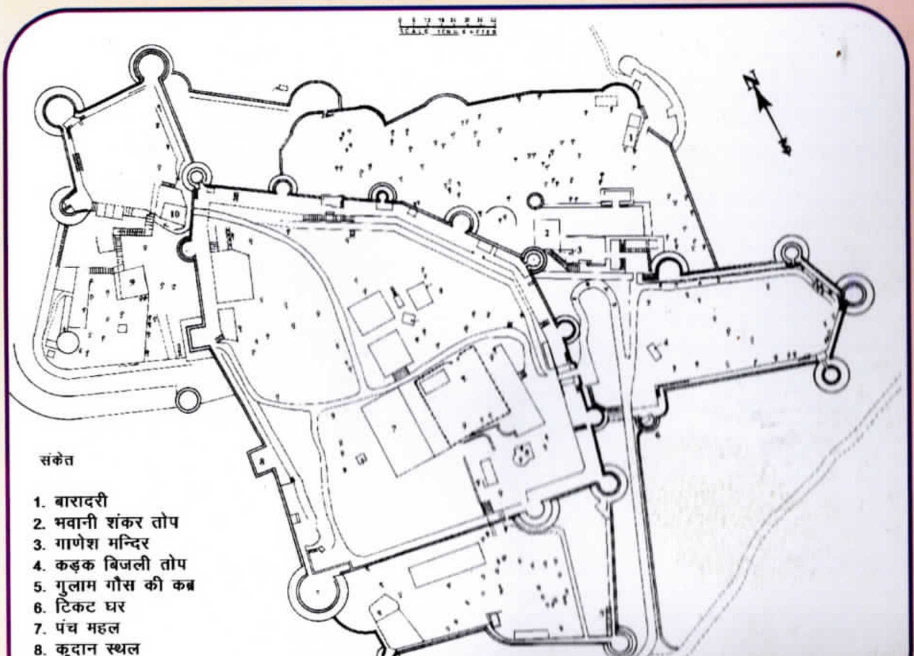

सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु हमारा कर्त्तव्य

क्या करें ?

- स्मारक को साफ–सुथरा रखने में सहयोग दें।
- स्मारक के प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने में सहयोग दें।
- स्मारक की गरिमा को बनाए रखें।
- स्मारक में उत्कीर्ण चित्रण, मूर्तियों आदि को दूर से देखें।
- असंरक्षित स्मारकों व यत्र–तत्र बिखरी कलाकृतियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

क्या न करें।

- चित्रण व अन्य कलाकृतियों को न छुएं तथा उन पर जल, तीव्र प्रकाश व अन्य पूजा सामग्री का प्रयोग न करें।
- अपनी विरासत को महत्वहीन समझते हुए उपेक्षित न होने दें।
- अपने आचरण से ऐसा कोई कृत्य न करें जिससे स्मारक की भव्यता तथा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध पर नकारात्मक प्रभाव पड़े।

प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम, 2010 के अनुसार

संरक्षित क्षेत्र – राष्ट्रीय महत्व का पुरातात्त्विक क्षेत्र

प्रतिषिद्ध क्षेत्र – निर्माण गतिविधि वर्जित

विनियमित क्षेत्र –राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण से अनुमति के पश्चात ही निर्माण गतिविधि अनुमन्य

प्रकाशक :
अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, झांसी मण्डल

36, रानी लक्ष्मीबाई महल, मानिक चौक, झाँसी– 284002
ई मेल : circlejhansi.asi@gmail.com,
circle.jhansi-asi@gov.in
Tel No. : 0510-2442325

सत्यमेव जयते

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

आलेख संयोजन : निकिता चन्द्रा, डा० शमऊन अहमद, सचिन कुशवाहा, आशुतोष जायसवाल

डिजाइन : मो० उवैस

2021